परिशिष्ट सप्तम्

गोविन्द गिल्ला भाई की प्रशस्ति में लिखे गये छंदों का संग्रह

१ कुंडलिया

स्वस्ति श्री गुन गन कलित गोविन्द गिल्ला प्रसिद्ध
किल्ले सिहोर सुथान में बसत रहत गुन बद्ध ।
बसत रहत गुन बद्ध नीत नित जानत नीके ।
कविता पर उपकार जान छपबावत ठीके ।
याते सुजस जहान होय परशंसैं नृप सुन ।
नारायन कवि कहे आपकों स्वस्ति श्री गुन ।

२ सवैया

सुन्दर शुद्ध सिहोर सुहावन ता महि साज अनेक सजाई
जाय नहीं कहि कीरति रावरि काशीपुरी मंहि सों छवि छाई
भाई नरायन के उर में वह फेर तिहूंपुर में सरसाई
आइ गुनी गर गुंजत गावत गोविंद गिल्ला गुनाकर भाई
सरदार कवि के शिष्य काशी निवासी श्री नारायण कवि द्वारा
सं० १९३१ में गोविन्द गिल्ला भाई के पास पत्र द्वारा प्रेषित छंद ।

३ दोहा

गुण गणतां विदवान तो सेंजे थाप श्रमिंद
लेखण केंप लखी शके गुण तारा गोविंद
तरणी तेज प्रताप थी उघडे ज्यम अरविंद
परकाशे मम दिल कमल मले मित्र गोविंद
कईक अतिशे कामनां कथनों कवि कोविद
चूके ते मम चिक थकी गुणकारी गोविंद
सारूं खारूं नीर पण साचू स्वांतिक विंदु
अवर जल इच्छे नही चातुर चित गोविंद

भला गया कई भूपती बणिया ने बाजिंद ।
अविचल रहेशे अवनि पर निश्चय नाम गोविंद ।
दादुर दुख दूरे टले वरसंता वारिंद ।
एम मित्र आवी मले गम्मत यशे गोविंद ।
मलवाथी मुदित रहे पुंगी नाद फनिंद ।
एवी मने आतुरता ग्रंथ मले गोविंद ।

२ सवैया

देश सुधारण धारण धीर धरी धर थी धज तें धरमोला ।
वालपनां वचनों वदि वीर विदारण नेम तणा वधु किल्ला ।
रे रमणी यह राखत रोज हरोज रची रस राग रसीला ।
लायकि लेखि लूंख तुफ लायक लाखतरे विधि गोविंद गीला ।

३ सवैया

वंश उजागर नागर सागर नेहिन नादर नाद रसीला ।
हीतु हजारहि को हर रोज हि हातम दील महा हरखीला ।
राज समाज विराजत राजत छाजत शांत सुभाव सुशीला ।
गांस गयी गहरी गुन की गुन गावत हूं तुम गोविंद गीला ।

४ सवैया

भुज चहे निज भेटन कों अब आंखि चहे अवलोकन प्यारा ।
सूरति नाद सुनवा जद त्यों रसना करने कों नाम उचारा ।
मेंटन कों भ्रम नामन चाहत बुद्धि चहे बनु नीश्व विचारा ।
आतम एज्यु निरंतर चाहत गोविंद गोविंद मित्र हमारा ।
सौराष्ट के लीमडी नामक स्थान के दरजी दुदा राम राम जी द्वारा
संवत १९५० के आसपास प्रेषित ।

१ दोहा

परम स्नेहि पंडित पुरुष नागर कविन नरिंद
सिंहपुर वासी सुजन जय जय आय गोविंद ।

२ कृप्पय

महापद्म निधि मिलै देव अर्पै जगदीश्वर ।
धरै पद्म निधि धाम धर्म धाता ज्यु अहीधर ।
कच्छप कमठ कृपाल मकर निधि मच्छ मिलावे ।
माधव शंख मुकुन्द अर्च नित कुंद सहावे ।
कवि गोविंद गिल्ला भाई कौं यह नवनिधि अनुकूल रहै ।
रंग उमंगित रामबन कृत कृप्पय आशिष कहै ।
महुवा के साधु बाबा रामबन जी द्वारा प्रेषित कृंद ।

१ कृंद दोहा

गोविंद रस गीला सदा लीला काव्य प्रबीन ।
शोधक बोधक ग्रंथ वर कवि प्राचीन नवीन ।
जामनगर के श्री त्रीकम लाला गोपाल भट्ट जी द्वारा प्रेषित ।

१ दोहा

मुलक काठियावाड में नगर सिहोर प्रधान ।
लहे प्रेम कर पत्रिका गोविंद भाइ सुजान ।
भारत जीवन प्रेस बनारस के श्री रामकृष्ण वर्मा द्वारा प्रेषित ।

१ कवित्त

काव्य कला गाहक औ चाहक सुकीर्ति नेक
वाहक सुटेक एक पालक गुनी को है ।
लायक सुलच्छ स्वच्छ पायक समस्त गुन
पायक पिनाकी पद पूज्य पन जी कौं है ।

माधव भनंत ऐसा कविन मैं छत्रपति,

वरल नरिंद मंत्रि दीपत दुनी कौं हैं ।

मैरी कहि मान मन हैरी सब टेरी कहुं

कवि कुल टीकौ कवि गोविंद श्री नीकौ हैं ।

जूनागढ़ के श्री माधव पुरुषोत्तम बारोट द्वाराप्रेषित ।

१ कवित्त

स्वस्ति श्री सकल सद गुण गण मंडित हो,

पंडित प्रवीनन के नीके रिझवार हो ।

सर्व उपमान के निधान गुणवान चारु,

चित्रित विचित्र रचना के करतार हो ।

मित्र मन रंजन चकोर कौं कुमुद बंधु,

नव ल अनंत मिल मानत विहार हो ।

राजौ श्री गुविंद कवि आनंद समाज सदा,

उमर दराज होउ अति सुख सार हो ।

२ दोहा

भरत नग्र तैं पत्र लिख भेजत नवल कवीश ।

रक्षा कवि गोविंद की करि हैं श्री जगदीश ।

समाचार ह्यां के भले भले तुम्हारे गेह ।

यह व्यौरौ आगैं अबै समझौ सहित सनेह ।

कुशल पत्र तुम वांचकैं भी उर भयो अनंद ।

लिख्यौ आपने ताहि कौ उत्तर यहे विलंद ।

कृपा बराबर राखियो मो पर अधिक नवीन ।

कुशल पत्र लिखते रहो सब विधि सुखद प्रवीन ।

भरतपुर के कवि श्री नवल किशोर जी द्वारा प्रेषित ।

१ कवित्त

गेह अरु देह में अजुह है गोविंद वर,
नेह ेम गोविंद जू अछेह सरसत हैं ।
हृदय सरोवर में ध्यान अरविंद विषे,
रसिद मलिंद त्यों गोविंद परसत हैं ।
पावस ऋतु के श्याम घन लौं गोविंद सदा,
मों पर अनुग्रह पीयूष बरसत हैं ।
पुंडरीक लोचन तें जहां हेरों तहां मित्र,
परम कृपाल श्री गोविन्द दरसत हैं ।

२ दोहा

मात तात गुरु बंधु सुत संबंधी प्रिय जोय ।
पैं सुमित्र गोविंद को समता लहै न कोय ।

गुजरात के प्रसिद्ध हिन्दी कवि गोपाल जगदेव द्वारा गुजरात के गांव पाल से प्रेषित ।

१ कवित्त

निवासो सिहोर के सु गोविंद जू गिल्ला भाई,
पुस्तक पठाई आइ दोऊ बदि होड सों ।
एक बलभद्र कृत शिखनख संग सहो,
सरस सलौनी शुचि राधामुख षोडशी ।
दूजी ग्वाल कवि कृत षटऋतु वर्णन है,
अंत में कवित्त में स्वकोय मरोड सों ।
भाव रस नायिका अनेक अलंकार लखि,
विहारी सुयति गति मारे घुड दौड सों ।
भरतपुर के कवि जानी बिहारी लाल द्वारा लिखित ।

१ कवित्त

मोर मन दोर घन घोर घटा छटा और,
चकवा उमंगी चित अरक उजाल का ।
चंद कौ उपासक है चौंक्स चकोर और,
भिखारी को भाव भव्य भोजन नवाला का ।
हिमाला निवासी शीत काल में जिग्यासू जैसे ।
बालांबर शाला लाला वासुदेव ज्वाला का ।
तैसे सुज्ञ शिरोमनि काव्य के रसिक नीके,
कवि गुनी ग्राहक गोविन्द ग्रंथमाला का ।

पगीगांव कच्छ के निवासी जाडेजा प्रतापसिंह जी भुणा भाई द्वारा गोविन्द ग्रंथमाला के विषय में लिखि छंद ।

१ कवित्त

निराकार निर्गुन औंक सगुन उभय पच्छ,
स्वच्छ करि राखे हैं सुमेरु रस आला कै ।
नवनीत प्यारे प्रेम दाम में पिरोय धरे,
खरे भाव भूषित नसैया भव जाला के ।
व्यंग्य ध्वनि ओज माधुरी के मधु मांहि सने,
गने जात चित्त में कवित्त नंद लाला के ।
एक एक मनका मन कामना करन सिद्धि,
रिद्धि के भरैया हैं गोविन्द ग्रंथमाला के ।

२ कवित्त

कवि कुल मारग दिखैया शुद्ध सान भरे,
कुकवि कुतर्क में वितर्क गुन आला के ।
नवनीत प्यारे गुन मंडित अनेक भांति,
पंडित प्रवीन अवलंब रस ख्याला के ।
नायकादि नायक विभायक विभाव भाव,
भूषन सिंगार और गुन गन वाला के ।

भरनौं हिये मैं रत्न मनका प्रकाश पुंज,
बरनौं कहां लौं मैं गोविंद ग्रंथमाला के ।

३ दोहा

गो बानी सानी सुधा कवि कुल कुमुदानन्द ।
गोविंद ताप नसात लखि, गोविंद कविता चंद ।
मथुरा निवासी कवि नवनीत चतुर्वेदी द्वारा गोविन्द ग्रंथमाला के विषय में प्रेषित छंद ।

१ दोहा

गोपीजन वल्लभ सदा ब्रजजन भरत अनंद ।
त्यौं कविन्द्र आनन्द कौं तू कविराज गुविंद ।
महेसाणा निवासी ब्रह्मभट्ट श्री जगनलाल अभयाराम भाई द्वारा प्रेषित छंद ।

१ कवित्त

शिवराज शतक की सरस बनाई टीका,
ठीका ठीक भूषण चरित्र लिखा लेन में ।
काव्य शुद्धता की शोभा अधिक प्रकाश कोनी,
पद छंद भेद भाव बिलसाया बेन में ।
आनंद कौं पावत है बाचक चकोर वृंद,
पेखी चंद पूरन कौं शरद को रैन में ।
कविराज गोविंद की रचना रसिक रम्य, रतन की ज्योति ज्यौं
झुवकी झुकी नैन में ।
पगोगांव कच्छ के निवासी जाडेजा प्रतापसिंह जी झुणाजी द्वारा शिवराज शतक के विषय में प्रेषित छंद ।

टिप्पणी- उपरोक्त सभी छंद गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रह में प्राप्त हस्तलिखित प्रति सं० १४२ से संकलित किये गये हैं ।